माँ लक्ष्मी की कहानी

माँ लक्ष्मी की कहानी – एक गांव में एक सेठ रहता था। सेठ के एक बेटी थी । वह हर रोज पीपल को पानी देने जाती थी । रोजाना पीपल के वृक्ष में से लक्ष्मी जी प्रकट होती थी और चली जातीं थी । एक दिन लक्ष्मी जी ने सेठ की बेटी से कहा – तुम मेरी सहेली बन जाओ । तो लड़की ने कहा कि मैं अपने पिता जी से पूछकर कल आऊंगी और आपको बताउंगी

सेठ की बेटी ने घर जाकर अपने पिता जी को सारी बात कह दी । तब उसके पिताजी बोले वह तो माता लक्ष्मी जी हैं । हमारे को और क्या चाहिए तुम लक्ष्मी जी की सहेली बन जाओ हमें कोई ऐतराज नहीं है । दूसरे दिन वह लड़की फिर पीपल के पेड़ के पास गईं । तब लक्ष्मी जी पीपल के पेड़ से निकल कर आई और कहा सहेली, क्या कहा है आपके पिताजी ने, तो लड़की ने कहा में आपकी सहेली बन जाऊंगी और दोनों सहेली बन गई ।

लक्ष्मी जी ने उसको अपने घर खाने का न्यौता दिया । घर आकर लड़की ने मां – बाप से कहा कि मेरी सहेली ने मुझे खाने का न्योता दिया है । तब पिताजी ने कहा कि सहेली के खाना खाने जाओ पर घर को संभाल कर जाना । तब वह लक्ष्मी जी के यहां खाना खाने गई तो लक्ष्मी जी ने उसे चुन्नी ओढ़ने के लिए दिया , रुपये दिये , सोने की चौकी , सोने की थाली में छत्तीस प्रकार का भोजन(व्यंजन) खाने को दिया ।

खाना खा कर जब वह जाने लगी तो लक्ष्मी जी ने चुन्नी पकड़ लिया और कहा कि में भी तुम्हारे घर खाना खाने आऊंगी । तो उसने कहा आ जाओ आपका स्वागत है हमारे घर । वह घर जाकर चुपचाप बैठ गई । तब पिता ने पूछा कि बेटी सहेली के यहां खाना खा कर आ गईं ? और तू उदास क्यों बैठी है ? तो उसने कहा पिताजी मेरे को लक्ष्मी जी ने इतना दिया अनेक प्रकार के भोजन कराए परन्तु मैं कैसे करूँगी उनके लिए इतना जितना उन्होंने मेरे लिए किया है ?

हमारे घर में तो कुछ भी नहीं है । तब उसके पिता ने कहा माता रानी को कोई चीज़ की जरुरत नहीं है आप गोबर मिट्टी से चौका लगाकर घर की सफाई कर ले । चार मुँह वाला दीया जलाकर लक्ष्मीजी का नाम लेकर बहार में बैठ जाना। लड़की सफाई करके लड्डू चुका में रख के रसोई में जाके बैठ गई । उसी समय कही दूर एक रानी नहा रही थी । उसका नौलखा हार चील उठा कर ले आयी और उसके घर वह चील लड्डू को देखकर नौलखा हार डाल गई और उसका लड्डु ले गई।

बाद में वह हार को लेकर बाजार में गई और सामान लेने लगी तो सुनार ने पूछा बेटी आपको क्या चाहिए ? तब उसने कहा कि सोने की चौकी , सोने का थाल , शाल दुशाला दे दो , मोहर दो और सामग्री दो । छत्तीस प्रकार का भोजन हो जाए इतना सामान दें । सारी चीजें लेकर बहुत तैयारी करी और रसोई बनाई भाव से गणेश जी की मूर्ति के सामने बैठकर भगवन जी से बोली की मेरी सहेली लक्ष्मी जी को बुलाओ ।

आगे – आगे गणेशजी और पीछे – पीछे लक्ष्मीजी आई । उसने फिर चौकी डाल दी और कहा , सहेली चौकी पर बैठ जाओ । जब लक्ष्मी जी ने कहा में चौकी पर नहीं बैठती , किसी के भी नहीं बैठती तो उसने कहा कि मेरे यहां तो बैठना पड़ेगा । फिर लक्ष्मीजी चौकी पर बैठ गई । तब उसने बहुत खातिर की । जैसे लक्ष्मी जी ने उनकी साथ किया, वैसे ही उसने किया ।

लक्ष्मीजी उस पर बोहोत खुश हो गईं । और माता रानी ने उनको घर पे बोहोत धन दौलत दी । सेठ की बेटी ने कहा , मैं बहार जेक अभी आ रही हूँ । तुम यहीं बैठी रहना और वह चली गई । लक्ष्मीजी गई नहीं और चौकी पर बैठी रहीं । उसको बहुत दौलत दी ।

हे लक्ष्मीजी जैसा तुमने साहूकार की बेटी को दिया वैसा सबको देना । कहते सुनते , हुंकारा भरते अपने सारे परिवार को दियो । पीहर में देना , ससुराल में देना । बेटे पोते को देना । है लक्ष्मी माता ! सबका कष्ट दूर करना दरिद्रता दूर करना , और सबकी मनोकामना पूर्ण करना ।